



THREE BLADES. ONE GILLETTE.

Ferdinando Frega — Nando the Scribe

तीन ब्लेड। एक जिलेट।

जो कुछ सचमुच हमारा है — बिना शोर के, बिना ख़बर के — वह फिर भी आगे बढ़ता रहता है।

वक्रत की तरह।

वह पूछता नहीं। वह चेताता नहीं।

वह आ जाता है।

उसका एक नाम है: नियति।

एक आदमी ने कभी तय किया कि उसे याद रखा जाएगा।

अपने इलाक़े भर में नहीं। कुछ वक्रत के लिए नहीं।

पूरी मानवता के लिए।

उसके पास एक ही मौक़ा था।

अमेरिका में एक दोपहर, उसने ज़मीन से एक फेंका हुआ ब्लेड उठाया।

बोटल का ढक्कन किसी और ने ईजाद किया था।

उसे कुछ और दिखा।

उसने कोई उत्पाद नहीं सुधारा।

उसने एक हरकत को नए सिरे से लिख दिया।

शेविंग एक सिस्टम बन गई।

ब्लेड फेंकने की चीज़ बन गया।

नाम स्थायी हो गया।

जब लोग वह चीज़ खरीदते,

तो उसका नाम लेते।

किंग कैप जिलेट।

फ्रीमेसन।

द ह्यूमन ड्रिफ्ट के लेखक, 1894।

मेरे पिता।

एक खनिक और एक कुलीन माँ के बेटे।

लाड़ से पले। बिना हठों के गढ़े गए।

12 साल की उम्र में बड़े-बड़े आदमी उनसे डरते थे।

इसलिए नहीं कि वे हिंसक थे —

इसलिए कि वे हिचकते नहीं थे।

एक रात, सिनेमा जाते हुए,

उन पर अपने से बड़ी उम्र के लड़कों के एक झुंड ने हमला कर दिया।

अकेले।

भागने का रास्ता नहीं।

उन्हें ज़मीन पर एक ब्लेड पड़ा मिला।

उठा लिया।

उनमें से एक के चेहरे पर निशान छोड़ दिया।

वे भाग खड़े हुए।

वह पल कभी गया नहीं।

चौदह साल बाद:

120 उम्मीदवार।

एक पद।

वे तीसरे नंबर पर आए।

पहले दो ने मोल-भाव किया।

उन्होंने नहीं किया।

वे जिलेट इटली में दाखिल हुए।

और 40 साल रहे।

रिटायरमेंट के बाद कुछ नहीं बदला।

लोग अब भी उन्हें सड़क पर रोक लेते थे।

अब भी पहचान लेते थे।

उनके नाम से नहीं।

उससे, जिसका वे प्रतीक थे।

फ्रेगा।

जिलेट वाला आदमी।

ब्लेड।

हर सोमवार वे तड़के निकल जाते।

हर शुक्रवार लौट आते।

कभी शिकायत नहीं की।

कभी सफ़ाई नहीं दी।

वे मेरे पिता थे।

एक दिन उन्होंने किसी से कहा कि मैं ही वह अकेला बेटा हूँ जो सचमुच उन पर गया है।

मुझे बरसों बाद पता चला।

यही उनका तरीका था।

कोई एलान नहीं।

सिर्फ दिशा।

मैं 19 का था।

फ़ौजी सेवा।

पुलिस की परीक्षा पास।

वे मुझसे नेपल्स में मिले, मई 1985।

वह बाप-बेटे की मुलाक़ात नहीं थी।

वह काम के बारे में नहीं थी।

वह कुछ और थी।

उन्होंने मुझसे एक ही सवाल पूछा:

“अपनी ज़िंदगी का तुम क्या करने वाले हो?”

कोई दबाव नहीं।

कोई सलाह नहीं।

बस इतना।

मैंने सात दिन लिए।

फिर मैं जिलेट से जुड़े एक कंसोर्टियम में दाखिल हुआ।

सबसे निचला काम जो हो सकता था।

शुरुआत सबसे नीचे से करनी पड़ती है

अगर चोटी देखनी हो।

अठारह साल।

मैं वहाँ पहुँच गया।

फिर कुछ ख़त्म हो गया।

पैसा नहीं।

पद नहीं।

दिलचस्पी।

तो मैं चला गया।

वे मुझसे फिर मिले, अकेले में।

तब तक रिटायर हो चुके थे।

उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश नहीं की।

उन्होंने कहा कि वे समझते हैं।

उन्हें हमेशा पता था कि ऐसा होगा।

क्योंकि मैं उन्हीं जैसा था:

जिसका कोई अंदाज़ा न लगा सके।

हमेशा किसी बेहतर चीज़ की तरफ़ बढ़ता हुआ।

30 नवंबर 2003।

मैंने अपनी माँ जिलेट को छोड़ दिया।

पर डीएनए नहीं खोया।

तीन कहानियाँ।

तीन पल।

यह चौथा है।

1993 से फ्रीमेसनरी।

पाइथागोरस।

गूढ़ साधना।

आप अनगढ़ पत्थर लेते हैं

और उसे ऐसी चीज़ में बदल देते हैं जो बोझ उठा सके।

दिमाग उसे धार देता है

जिसे दिल पालता है।

मैं अंतरराष्ट्रीय मैनेजर बन गया।

दुनिया घूमी।

और अठारह साल।

फिर एक दिन

मैंने लिखना शुरू किया।

एक किताब नहीं।

दो नहीं।

दस नहीं।

पचास नहीं।

सौ नहीं।

1600 से ज़्यादा।

मैंने गिनना छोड़ दिया।

मैं चाहता हूँ कि मुझे पहचाना जाए।

पर मैं किताबें नहीं बेचता।

मैं पहुँच देता हूँ।

सिस्टम को समझ नहीं आता कि मुझे कहाँ रखे।

एक स्वतंत्र लेखक जो सब कुछ मुफ्त दे देता है

कोई श्रेणी नहीं है।

वह एक समस्या है।

मैं सिस्टम पर हमला नहीं करता।

मैं उससे बुरा करता हूँ।

मैं उसमें से मूल्य निकाल लेता हूँ।

वे मुझे पढ़ते हैं।

पर मुझे सँभाल नहीं सकते।

मेरा दाम नहीं लगा सकते।

मुझे किसी फ़्रेम में नहीं बिठा सकते।

मुझ पर क़ाबू नहीं किया जा सकता।

मेरा कोई दाम नहीं।

क्योंकि मैं कुछ बेचता ही नहीं।

नियति की कभी उम्मीद नहीं होती।

मेरी तरह।

पर वह होती है।

और मैं अब भी उसी की तरफ़ बढ़ रहा हूँ।

नांदो